

II-326

धम्मरत्नं वज्रपादयः सुरत श्री महाविहार



ॐ नमः श्रीवक्रसन्तवायालिकयपूजाव  
ज्ञायीपयवक्रसगुलमनआदिअनमूलमा  
लकमनल्लापनायाय॥ शुभमगुलसिलेनय  
पावपूजाभिलिपूजाअनिपादपूजा॥ महर्नि  
रुथमन्वाआदिकाय॥ मगुलथिलमुक्ति॥

विमर्जन॥ समाधिगुलमनभापिनीपूजा॥  
दवपूजाक्रमलं॥ थर्नलि, लिगययातधाता  
सनवाक३सावाकवास्थपूजायाय॥ मूला  
वार्यकमवार्यदिगमवार्यक्रमलंदवरुकि  
सलीनय॥ ८नवाकप्रमिंश्ववश्वरुथक



जायानक ॥ गुनुर्गुर्ववव १०६४ कृष्ण  
जावाक सङ्गुर्गुर्वव १०६४ कृष्ण  
पदवक्राय ॥ अयनिमाल ॥ धनंलिवाक  
पूजामुलपिलस्वानननेमुनिगमाकृ  
कृमापलमृमिवाद्विकपूजादकलाग्ल

लिग्रहसमयावक्र ॥ धूमिलिकयविधिषा  
॥ ६ ॥ ॥ अंनमश्चक्रनाथय ॥ नृय  
लाह्यापनविधिमाह ॥ जाया ॥ थमालिपूजा  
पविक्रमलीयाय ॥ देवर्ग ३३३ पनायाहान  
यमाल ॥ देवपूजाधूनहाडा ॥ नकि ५१०६



कोधस्वपुनर्निविषाष्टाकमर्लपूजाया  
जापमन्त्र॥३॥वलि॥धूमिधूनछाडा.  
ज०धमन्त्रपदपंदछाडा॥ॐसूरुनिमूरु॥  
रु॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्रपय॥ॐगृन्त्र  
॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥  
॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥

अपस्वपुनर्निविषाष्टाकमर्लपूजाया  
जापमन्त्र॥३॥वलि॥धूमिधूनछाडा.  
ज०धमन्त्रपदपंदछाडा॥ॐसूरुनिमूरु॥  
रु॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥  
॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥  
॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥ॐगृन्त्र॥



यमशानी॥नेमलयमइनी॥वायवा.यमदं  
ॐ शानयम.मथनी॥उद्धडप्रीषवकवर्हि॥  
अधसूरुवाऊ॥थूनि कमली वक्रापालसहि  
दसदिगसनकिलनाय.कमली पूजा.जापथ  
ऊ२मकुटा॥थूनिधूनकाडालि.दवज्ञाय॥वा  
कपूजामगुलथिलस्वानननमुनिभनाकव

आमिर्वादसुगुलनाय॥विमपूजादकृष्ण.द  
उसन्नवभालिलहि.समयावकगलव  
गिललिनेमधूननालीनिर्णय२सूर्यपूजा.व  
निमनविथमाल॥दिगवायपनिश्चननिर्ण  
दवऊपमाल॥थूनिआखाखनविधि॥१॥



२६५

थनं लिप्याखनमालकासनधूनकाडा अंक  
कावायापूकापर्वभाविपूजायायमाल॥म  
रुमसाहूथयायंदूहला॥ ६ ॥ ॥  
अंनमठपीपन्ननृथववाय॥ बरुमीननृथ  
सिद्धिलारुपूजाविधिमाहाकापीपूलकद

यका॥पर्वभालसगुलमरुधनाकलमअर्घ  
पानय३ अर्घाकंमपायप्रनिपाकिनथाप  
लप.आदिअनूमूलपालपर्यन्तथापनाया  
या॥ पूर्वम.मालआदिनद्यद्यलावहूआदि  
नकीभवहूमददकाखन॥ दक्रिणसमूजा



दिखिं कला आदि कुलिया मद्दक स्वने ॥  
पश्चिम सवीक्षदि. कनी मद्दक स्वने ॥ उरु व  
स. भैख पा ग आदि न सान थून मद्दक स्वने  
॥ विदिग सनाना वाद्या ॥ श्री पी द म दि ग ला क  
पाल ॥ धन स्थपना धून काडा ॥ ८ वा सें गुनू

मलुल. पंचगव. सिधु थाय. निर्मलिव कथाय  
पनि कुमने पूजायाय पाउ पूजा पंच भवी पूजा  
थून काडा ॥ उद्याना. निर्मलिव दि. व गुलि धानि  
पद पं थाल गुजा पल पं म व मालिया दडा  
न रुय कायलने पूय ॥ सि. भुनय. देव रूप  
नियाद पूजा ॥ श्री लिम रुनिन साधन ॥ सलाड



स धूप रुय ॥ स्वरुव मुद्रा ॐ स्वादि ॥ ३ रुगव  
न श्री अमक स विद्या वा रुद्रं रु ति स्वादि ॥ ३  
वासं धूप रुय ॥ ॥ ग्ल सावन न य रु वी य. य रु  
या म रु क म र्त्त पूजा मूल म रु ए धि स जा प या  
य ॥ य ध र्मा अ का वा मूख ॥ म रु नि न रु य ॥

अलि गाल पि रु वा य द व या थ स र्म स्वन ॥ आ दि  
गु रु ॥ म रु ल थि ल स्वा न रु न व लि वि स र्जन ॥  
वि स मा धि. स गु द म रु मा म की पू जा ॥ दे व पु  
जा ॥ रा व ना ॥ धूप नि वां रु न ला हा मि व का. नि  
म रु ए. स्ना न वा वा म रु ल. वि रु रु रु म. स्ना न  
ने व य अ इ इ म. म रु य ध र्म रु ला हि ध क ॥ म



कासामुखदकृष्णा॥ कालपनिपूजा॥ ध्वलिवा  
घपूजा॥ शवना॥ कमलसुखदीकवन्धिनान  
रुसिस्त्रुवित्वाहं॥ ओं॥ श्री॥ वासुदेवसंज्ञक  
नीलपीमावृक्षहविगवन्धुसंज्ञकवीर्यवर्मा  
मूवृक्षादिहिंसावीरिवाक्यमपूतानेवि

राव्या॥ आपानि॥ धूलि॥ हाग्निककाकमर्त्यपूजा  
जाप॥ ओं॥ वज्रवीर्य॥ ओं॥ वज्रवीर्य॥ वीर्य  
दिपागमा॥ ओं॥ वज्रवीर्य॥ मृदंगकी॥ मृ  
दंग॥ ओं॥ वज्रमूवृक्ष॥ स्त्रिकाटा॥ ओं॥ वज्रगी  
नकी॥ नासादि॥ रुद्रादिषक॥ ध्वलिजाल



मानसिक ब्रह्मचार्य दुरत श्री महाविहार

II-326



श्री कुमार

व३॥५६

महाराज ब्रजचरण दुरत श्री महाविहार

II-326



खालं रूपादि पूजा क्रमः ॥ स्वस्वमनुज जाय ॥  
धलिवलिविध ॥ धलिभीलकाय ॥ खानकाति  
नरुडा नालादिवाद्यसुभद्वय ॥ कलत्रादि  
स्वर्गनयागुक्तिर्नरुडा ॥ धनिसुद्धावि  
क्रमदेशनाल. मूलमनुज जाप याज्ञानिक

विक्रदयेडावाक्यपूजा ॥ मणुनथितुक्ति म  
नाकनरुमापं भ्रातिर्वाद ॥ सगुणमहर्नि  
दवसुद्धकृष्टय. वितपूजादकृष्ट. दगुप्त  
मयभ्रातिग्रहस्तवाहिवलहिय ॥ समया  
वक्र ॥ धनिधूनडा. नमस्तेनालवान ॥



सन्तिकुङ्कनसनकाडापि हाडय स्नाननिरु  
कर्मधनकाडागुनमधुलसमा विदव पूजा  
कथनधनकाडावाक पूजामधुलथिल वि  
नपूजादकि ॥ आच्छसममयावक पलायं  
उक्तमनाकवविसर्जनि मधुलपागासास

ज्ञाय ॥ महनिर्ननियदं २ श्री । वाजनलडाज्ञा  
यदं २ जालवमुलडाज्ञायदं २ श्री ॥ स्नानका  
कायधनलिङ्कायननिर्दवज्ञाय ॥ धूनि  
पूतकृष्णीलकायविधिहस्ता ॥ ६ ॥ ॥



आखालस पुत्राविधिमालकायायशुकाउ  
पाष्मानयायमालशुला॥दवयादकृष्णश  
दिनदकैउपाष्मायात॥दडावाउघानपति  
माल॥कृवामूलाचार्ययात॥कृवाकृमान  
दववा॥कूरुवा१उपाष्मायात॥मूलमील

कूरुदववा१कूरुवा१मगुलवा१धनिमाल  
॥दववाकृपायाथमूलाचार्यडाकृमान  
डाकृवाकृवाविधिमालवाकिदकैउपाष्मा  
यातशुला॥ ॥घानपतिपंचनालखल  
कवानमाल॥पंचनालदकृष्णदी१२कृष्ण



गुनर्द४॥ चर्मसिद्धवादी २५ प्रतिद्यानप्रतिमाल  
रत्ना॥ ६ ॥ ॥ लत्याछाडाविकायमाल  
श्रैककावापूजाधनडासनमूचाल॥ छात्र  
यादिनसायाडायसिद्धदिनकूकूलमीला  
काय॥ ज्ञापापूर्वशिवाडानमाल, पंचभा  
पूजास, रूप, रुकायाये॥ ६ ॥

अंतम४ श्रीवक्रनाथमया॥ वक्रगीतनृत्यसु  
पूज्यानीनृत्यसानाविसर्जनसिद्धिमाह  
कपीमूलावायदिगावायवहनिनथडा  
छायनतिशंदवज्ञाय॥ भगुकथनंदवस्  
शकपूयकायकालूसादिनदवल्कलाह



नयमनाकव.कमापन॥ ॥धनीलिपनि  
कमनथापलपैरुगसापैवाकूमपूजायाय॥  
मरुगसाकलमपूजायाय॥गुनमपुल  
सिखनय.कूरुआदिपूजापतिपादपूजा  
आदिलहिय॥समाधि॥समुत्तमतथा

पूजादेवपूजा॥दिगपूजा.वाक्पूजा.म  
लथिलमुनि.मनाकव.कमार्षआमिर्वादि  
सुवतनयवितपूजादकलमभानियहस  
समय॥पैलीधैरुगमनाकव.कमा  
पनविस्तरित.कीवगलकापालिकाथ



लि कथने ॥ मनु४ ॥ ओं वज्र की लय डकी लय  
वज्र वन भ्राह्म्या  
थने लि की लन पे वा प वा न पू जा या हा ज, ना  
ल प ति भा ह नी दे व या नि मा ल्य द कां खू सि  
स पू रू हा स वा य क का थ ॥ दे व प नि थ

थाम सं वि श्रा न क ॥ दे व ल्क द्वा या गु वा य  
ल व लु लि का य या न द २ गु व रू त्व वि स लि  
का या ज थ न इ रू ला ॥ अथ नि मूल भी  
ल लि न वि धि रू ला ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥  
स २ ४ २ वे गु पु न क मू वि ह र्ष या मा पि  
का थ वा हा या मृ मृ ता न न्द न थ ज न वा या ॥ ४ ॥









हार